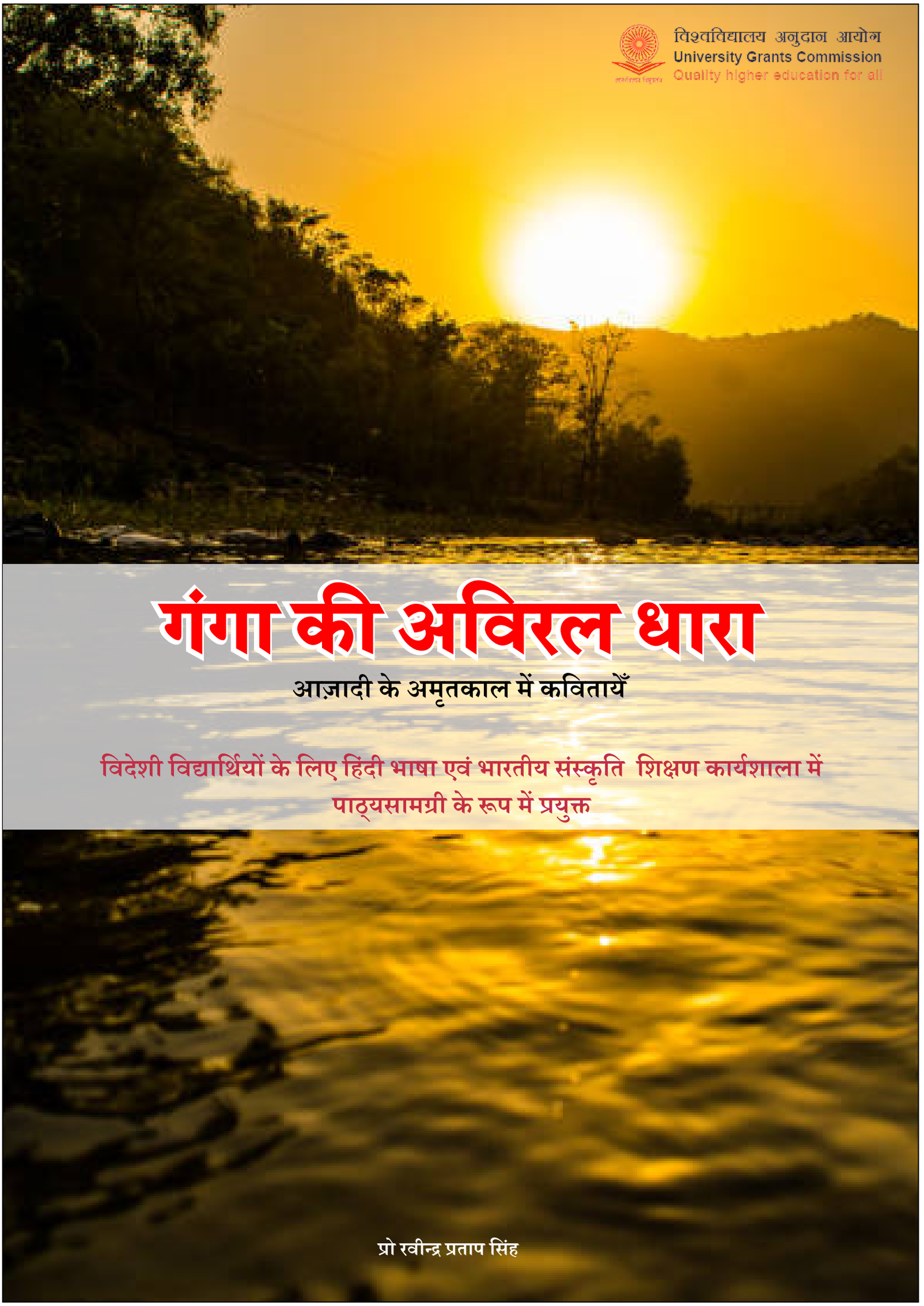
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
University Grants Commission
Quality higher education for all
गंगा की अविरल धारा
आज़ादी के अमृतकाल में कवितायेँ
विदेशी विद्यार्थियों के लिए हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति शिक्षण कार्यशाला में
पाठ्यसामग्री के रूप में प्रयुक्त
प्रो रवीन्द्र प्रताप सिंह

गंगा की अविरल धारा

आज़ादी के अमृतकाल में कवितायेँ

••••

विदेशी विद्यार्थियों के लिए हिंदी भाषा एवं भारतीय संस्कृति शिक्षण कार्यशाला में पाठ्यसामग्री के रूप में प्रयुक्त

प्रो रवीन्द्र प्रताप सिंह

प्रकाशक : लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ

प्रथम संस्करण : 2023

कॉपीराइट : लेखकाधीन

विषय सूची

क्रम संख्या	शीर्षक	पृष्ठ
1	राष्ट्रामृत कहें इस धरा के गान	8
2	उदारता का प्रण	9
3	यहाँ हर पल नये स्वर हैं	10
4	दिये सम्यक मूल्य	11
5	सींचा सर्वदा रक्त से	12
6	पवन सर्जित गीत हैं	13
7	मानवता का हर पल स्वागत	14
8	वैभव की यशो कहानी	15
9	जगत को दे ज्ञान वेदों का महातम	16
10	भूमि हमारी	17
11	अपनी धरती पर ज्ञान श्रृंखला	18
12	नदी नीर से भरी हुयी है	19
13	शांत नगर की हृदय धमनियां	20
14	बहती अविरल ग्राम नगर में	21
15	गंगा भागीरथी	22
16	बहती धारा	23
17	उन्नत परिपाटी	24
18	शक्ति आख्यान	25
19	अवध	26
20	मातृभूमि	27
21	भारत भू गौरवशाली	28
22	जहाँ समृद्धि खन- खन बोले	29
23	राष्ट्र शक्ति	30
24	इतिहास इन्ही से बनता है	31
25	है शांति यहाँ दर्शन चिंतन	32-33
26	जीवन उदधि भरा मूल्यों से	34
27	राष्ट्र तुम्हारा खड़ा वहाँ	35
28	पथ पर चल स्थिर हो मन	36

29	युद्ध	37
30	स्नेह रंग	38
31	सदा जागृत	39
32	राष्ट्र चेतना के स्वर	40
33	संस्कृति के उन्नत महाकोश से	41
34	फैली है हर तरफ वल्लरी	42
35	हम भरें उड़ान , प्राप्त करें ध्येय	43
36	गुंजित सभी दिशायें	44
37	नदियां ममतामयी यहाँ पर	45
38	जन गण के गौरव का प्रतीक	46
39	गाथायें सब करें समन्वित	47
40	अमृत काल है आज़ादी का	48
41	भाव भारत वंदना	49
42	तुम शक्ति पिंड श्रेष्ठ	50
43	हिंदी हमारी	51
44	विपदा के क्षणों में	52
45	लिये रश्मि जीवन प्रभात की	53
46	शिला लेख बन जीवन दृष्टि	54
47	जब हर पथ पर शिलालेख बन	55
48	कितने विहग यहाँ रह जाते	56
49	विश्व सोच है , नयी दृष्टि है	57
50	जय जय हमारी स्वतंत्रता	58
51	भारत का कण कण आलोकित	59
52	दीप जलायें संस्कृति के	60
53	राष्ट्र चिंतन	61
54	स्वर प्रबल एक भाव	62
55	राष्ट्र का यह पर्व प्रेरित	63
56	हम स्वतंत्र हैं मन स्वतंत्र है	64
57	विभाजन विभीषिका	65
58	राष्ट्र के हैं शब्द झंकृत	66
59	मन कहाँ शांति पायेगा	67-68
60	अपनी मिटटी के रंग	69
61	यह देश	70
62	उठ -उठ पवन महासागर से	71

63	उस ओर पर्वत श्रंखला	72
64	गंगा	73
65	मोड़ कितने , वलय कितने	74
66	दर्शन चिंतन हर कोने	75
67	अपनी संस्कृति के कोई स्वर	76
68	भावों को लेकर हम विश्व पटल पर छाये	77
69	धरा बने ग्रह सुखद	78
70	भारत का हर दिवस पर्व है	79
71	सम्यक हो रहे संकेत	80
72	राष्ट्र के हैं स्वर प्रफुल्लित	81
73	हों कृत्य सभी प्रेरित	82
74	यह राष्ट्र ऊर्जा शक्ति ही है	83
75	स्वतंत्र रहे चिंतन अपना	84

प्रस्तावना

आज़ादी का अमृत महोत्सव , हमारी स्वतंत्रता के पचहत्तर वर्ष होने का सिर्फ उत्साह ही नहीं है, यह हमारे भावों के स्वतंत्र विचरण की आज़ादी देने वाला अमृत काल है। किसी देश की राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक स्वतंत्रता के साथ ही साथ उसकी अपनी सांस्कृतिक सोच भी बहुत जरूरी होती है। किसी भी समाज को उन्नत बनाने में सोच के पुनर्जागरण की महती आवश्यकता है। हमें भी अपने इतिहास पर चढ़े कुछ धूल धब्बों को आज़ादी के अमृत महोत्सव के परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है । जन मानस कहीं न कहीं समझता जरूर है कि हमारी उन्नत संस्कृति और सभ्यता को आक्रांताओं और उपनिवेशी सत्ता द्वारा कैसे कैसे हाशिये पर लाने की कोशिश की गयी। इसे नीचा दिखाया गया और तत्कालीन जनमानस में उसके अलग होने और रंग बिरंगे आवरण लगाकर सतही चीज़ों को स्वीकार करने की व्यावहारिक बाध्यताएं लायी गयीं। मन की शक्तियां सामूहिक रूप से सामाजिक शक्तियां बनती हैं और काल क्रम में वह राष्ट्र का निर्माण करती हैं। मानव सभ्यता के इतिहास ऐसे अनेक प्रकरणों , आख्यानों से भरे हुए हैं जहाँ नागरिकों के मन पर योजनाबद्ध , चरणबद्ध आक्रमण करके धीरे -धीरे समाज और राष्ट्र की जड़ों में विष घोला गया , और कालांतर में इसके दुष्परिणाम देखने को मिले पिछले लगभग हज़ार वर्ष का समय भारतीय संस्कृति के लिए काफी उथल पुथल भरा रहा है । मुहम्मद गोरी, महमूद ग़ज़नवी जैसे आक्रांताओं से लेकर अंग्रेजी शासन तक लूट खसोट की प्रवित्तियाँ राष्ट्र को खोखली करती गयीं। औपनिवेशिक शक्तियों ने अपने उपनिवेशों को पूरी तरह अपने प्रभुत्व में लाने के लिए समय -समय पर उनकी संस्कृतियों , सभ्यताओं , भाषा और संस्कृति पर जबरन अपनी संस्कृति थोपी और उनकी उन्नत परम्पराओं , संस्कृतियों और भाषा तथा साहित्य के प्रतिमानों को नीचा दिखने के लिए , उन्हें न्यून और बेकार बताया। भारत में मैकाले का कुख्यात मिनिट , जो 1835 में प्रकाशित किया गया , गैर जिम्मेदाराना तरीके से कहता है कि किसी यूरोपीय पुस्तकालय की अकेली अलमारी में रखी पुस्तकें भारत और अरब में सृजित मूल साहित्य से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं।यह कुछ नहीं बस भारत की सांस्कृतिक और वैचारिक श्रेष्ठता को उनके ही लोगों की दृष्टि में गौण दिखानी की कुटिल साजिश थी। मैकाले मिनिट के द्वारा भारत में अंग्रेजियत थोपी गयी और अंग्रेजी न जानने वालों को अंग्रेजी जानने वालों की तुलना में हेय दर्शाया गया। मैकाले ने भारत में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली को स्थापित करने की वकालत की ,और भारतीय भाषाओँ के स्थान पर अंग्रेजी और अंग्रेज़ियत को बल दिया। ऐसे ही उलूल जुलूल बातें उपनिवेश वादी लोग संसार के विभिन्न भागों में करते रहे। प्रकृति से जुडी अफ़्रीकी संस्कृति पर कुठाराघात करते हुए उपनिवेशवादियों ने वहां भी अपने दुष्प्रचार के अंतर्गतवहां बहुत से ऐसे ही मिथक गढ़े ।केन्या के उत्तरउपनिवेशी लेखक व विचारक गूगी व थीअंग वो की कृति डीकोलोनाइजिंग दी माइंड इसपर गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। इसमें उनका विचार है कि औपनिवेशिक अलगाव की भावना अंततः स्वयं से , अपनी पहचान से , अपनी

विरासत से अलगाव कराती है और धीरे धीरे हम उपनिवेशवादियों के रंग ढंग में इतना रंगते जाते हैं की अपनी अच्छाईयों को भी बुरा कहने में चूकते नहीं। विश्व में जहाँ जहाँ भी उपनिवेशवाद रहा है , कैसा भी हो , कभी भी हो - सांस्कृतिक, आर्थिक , वैचारिक या कुछ और सबकी प्रणाली और साजिश एक जैसी ही रही है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव स्वतंत्रता की समग्र भावनाओं का प्रत्येक पक्ष में संचार करने का सुअवसर है। हमें अपने महान राष्ट्र की गौरवशाली परंपरा का आभास करके उसके अनुरूप मन वचन और कर्म से समर्पित होने की आवश्यकता है। हमें अपनी महान संस्कृति और राष्ट्र की आकाँक्षाओं के अनुरूप अपनी सोच और अपना मार्ग प्रशस्त करते हुए आज़ादी के अमृत महोत्सव की सफलता में अपनी भागीदार निभाने का समय है ।

"गंगा की अविरल धारा " शीर्षक की वर्तमान पुस्तक भारत देश की समग्रता और वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति को दिखाती पचहत्तर कविताओं का संकलन है।

प्रो रवीन्द्र प्रताप सिंह

1
राष्ट्रामृत कहें इस धरा के गान

चलो राष्ट्रामृत कहें
इस धरा के गान
ग्राम नगरों विविध क्षेत्रों
में निरत तत्पर,
सर्वदा प्रतिक्षण,
कृषक , व्यापारी कर्मकार।
चलो राष्ट्रामृत कहें ,
मूल्य जो हमको मिले
सुनते सुनाते कोटिशः दृष्टान्त।
उन्नत विचारों से भरा
जिन अमृत गीतों ने हमारे प्राण ,
इसको नमन ,
इस राष्ट्र के उद्घोष ,
चलो राष्ट्रामृत कहें ,
इस राष्ट्र के संस्कार।

2
उदारता का प्रण

नदियां यहाँ पर बह रहीं
उत्साह को लेकर समेटे
पवन मलयज फैलता
उदारता का प्रण लिये।
यहाँ रज कण महकता।
गुण गंध की ले प्रवज्या ,
यहाँ श्रम कण ढुलकता
ले चंदनों की श्रेष्ठता।
विश्वास है हम को हमारी
आत्मशक्ति , एकता ,
विश्वास है हमको जयंती
श्रेष्ठ अपनी सभ्यता।
हम निरत सद्कर्म पर
प्रबल अपनी धारणा,
राष्ट्र चिंतन में हमारा
राष्ट्र अपनी प्रेरणा।

3

यहाँ हर पल नये स्वर हैं

यहाँ पग पग पर कथानक
यहाँ हर पल नये स्वर हैं ,
विश्व सा फैलाव है
आत्मीयता से सने रव हैं।
संस्कार से प्रेरित कथन सब
लहर कितनी झेलकर उन्नत खड़ा
ज्योतिर्मयी स्तम्भ।
निज आलोक से जड़ता मिटाता
ये प्रकाश स्तम्भ।
ऋषि मुनियों ने दिखाये यहाँ जीवन साम
और जगती जागती सभ्यता ने
दिये जीवन मूल्य।
राष्ट्र कैसे रहे जीवित
देखिये अप्रतिम नमूना ,
राष्ट्र ये चिरशक्तिशाली
मन हमारा सदा गर्वित।

4

दिये सम्यक मूल्य

महासागर गर्जना कर रहे उद्घोष
और उत्तर से हिमालय राष्ट्र प्रहरी
जन मन किये जागृत हमेशा
भर रहा है जोश।
दार्शनिक , ऋषियों , विचारकों ने
दिये सम्यक मूल्य ,
जो हमारे आत्मबल के , चेतना के मूल।
स्वर्ण पथ पर अग्रसर
राष्ट्र विकसित हर तरफ ,
विज्ञान भी , संस्कार भी ,
साहित्य , सुरुचि , कला,
कोटिशः मानक दिये
विश्वास के ,
जन समुदाय को।
नमन भारत राष्ट्र को
नमन संस्कृति प्रेरणा।

5
सींचा सर्वदा रक्त से

स्वतंत्रता के पर्व प्रेरित कर रहे
सोच हो प्रेरित हमारी ,
राष्ट्र की अवधारणा से।
हमने बड़े बलिदान देकर
संप्रभु बनाया राष्ट्र को ,
रखें अखंडित एकता
अक्षुण्य अपनी एकता।
बलिदानियों ने राष्ट्र को
सींचा सर्वदा रक्त से
और तोड़ी दासता के मेखला
वर्चस्व से।
ये पर्व अपने राष्ट्र के,
ये सोच प्रेरित कर रहे।
राष्ट्र को रख शीर्ष पर ,
स्वतंत्रता के पर्व प्रेरित कर रहे।

6
पवन सर्जित गीत हैं

जिस देश में बरसात में
घूप तपते काल में ,
हांड़ भेदी शीत में ,
हर समय के गीत हैं ,
कंटकों में , तरु काननों में
पवन सर्जित गीत हैं।
इस देश की ऊर्जा कहाँ तक
इसकी हिलोरें अनंत हैं,
यहाँ पर है शांत जल का
अमृतमयी फैलाव।

गीत गायन सा है कृषि कर्म
धान की बेरन हरेली
कर्मरत संगीत।
हरी आशा रोपते
हर पल नयी ले पौध।
धन धान्य से पूरित रहे ,
हर मन लिये ये कामना ,
श्रम बिंदु बन अक्षर खड़े
श्रम विजय के संगीत हैँ।

7

मानवता का हर पल स्वागत

खुल रहे हैँ द्वार हमारे
प्रेरित , वंचित , न जाने ,
कितने , कितने , कैसे आये ,
खुले रहे हैँ द्वार हमारे।
मानवता का हर पल स्वागत ,
मानवता के मूल्यों से
सदा बलवती अपनी संस्कृति
मानव तो मानव ही हैँ ,
उड़ चल पक्षी पशु आ जाते।
खुले रहे हैँ द्वार हमारे
भारत माँ का स्नेह सर्वदा
जड़ चेतन के हित चिंतन में।

8
वैभव की यशो कहानी

चलो गीत कुछ गायें
अपनी ममतामयी संस्कृति
हर मन भावों को पाला पोसा।
इसके वैभव की यशो कहानी
चलो गीत में ढालें ,
चलो गीत कुछ गायें।
भारत गौरव की अप्रतिम गाथा
अपनी संस्कृति की वल्लरियाँ
फैली सागर पार कहाँ तक ,
उनको चलो संजोकर लायें।
चलो गीत कुछ गायें।
अपनी ममतामयी संस्कृति
मन के वलयों में जो विकसित
इसके वैभव की यशो कहानी
चलो गीत में ढालें ।

9

जगत को दे ज्ञान वेदों का महातम

जब परिस्थिति जन्य तम में
ऋषियों ने अपने दिशा दृष्टि दी
उस काल के परिवेश में
महाऊर्जा ग्रन्थ की
विकसित हमारी परंपरा।
जगत को दे ज्ञान वेदों का महातम
सृष्टि ने सिरजा अनूठी श्रृंखला।
आज तक आलोक में इन गीत के ,
पोषित , अवस्थित परंपरा।
इस राष्ट्र के सन्देश गूंजे धरा पर ,
संस्कृति के अनूठे मूल्य ले ,
समय भेजे पथिक को पाथेय ,
वह पथिक , कल्याण हित
जो ले प्रवज्या है चला।

10
भूमि हमारी

ऋषियों के तप के प्रभाव से
आलोकित है भूमि हमारी ,
विज्ञान और तकनीकी की पोषक
अनत काल से भूमि हमारी।
हमने संस्कृति स्तम्भ गढ़े ,
संपूर्ण जगत को ,
 समय समय पर मानवता को ,
ज्ञान , शक्ति ,कौशल चिंतन के
कितने सम्यक अवदान दिये ,
संपूर्ण सृष्टि को कुटुंब मान
अमृत संबंधों के रूप गढ़े।
स्नेह प्रेम पाथेय बना
हम स्वविवेक से दीप्त रहे
जीवन पथ को आलोकित कर
पथ पर कितने पुंज रखे।

11
अपनी धरती पर ज्ञान श्रृंखला

जब अधिकांश राष्ट्र थे भ्रम में
अपनी धरती पर ज्ञान श्रृंखला
षडदर्शन पल्लवित हुये।
ज्ञान मनीषा मूर्त रूप ले
नव प्रकाश का हेतु बनी।
कितने ऋषिमुनि ज्ञान दीप ले
जग आलोकित करने निकले।
राष्ट्र आत्मा है प्रेरित
कल्याण शांति का भाव लिये
इसीलिए प्रति दिवस यहाँ पर
मानवता हित पाठ बने।

12

नदी नीर से भरी हुयी है

नदी नीर से भरी हुयी है
अमृत देती मानवता को
पोषित कर क्षेत्रों , राज्यों को
संस्कृतियाँ पोषित करते आयी ,
आदि काल से बहती आयी
नदी नीर से भरी हुयी है।
जीवन के हर मोड़ पर इसकी
कितनी महिमा , देन बहुत सी
धरती हंसती है नदियों से
अमृत देती मानवता को।

13

शांत नगर की ह्रदय धमनियां

शांत नगर की ह्रदय धमनियां
अपने उर में रखकर चलती
आदि नदी यह सरल गोमती
माता सी अभिसिंचित करती।

इतिहास नगर का
उलट -पलट कितनी गाथायें
इसके तात ने देखा परखा
कितनी कितनी ही घटनाये
इसके तट ने देखा परखा
कितनी कितनी ही घटनायें ।

अमर सृष्टि की यह प्रकृति की
वरदान श्रेष्ठ बनकर उतरी है।
जीवन को सम्बल आलम्बन देने
धरती पर अविरल बहती हैं।

14

बहती अविरल ग्राम नगर में

बहती अविरल ग्राम नगर में
दूर क्षेत्र में मैदानों में
भर कर उर में प्रेम नीर यह
करती सृष्टि को पोषित।

कृषक वृन्द की यह आशा है
खेतों में हरियाली लाती
भंडार अन्न का भर जाता
बूँद बूँद सरिता के जल का
जीवन को खुशहाल बनाता।

बहती अविरल ग्राम नगर में
दूर क्षेत्र में वन से होकर
भारत के हर एक नगर में।

15

गंगा भागीरथी

आदि समय से संस्कृतियों की
रक्षक है ये पोषक भी
भगीरथ के तप से प्रेरित
निकल विधाता के पवित्र पात्र से
गंगा भागीरथी नमन है।

साम्राज्यों का इतिहास देख
संस्कृतियों का उत्थान देख
संस्कारों को निर्मित कर
भारत की जीवन रेखा
गंगा माँ कल्याण हेतु।

भारत की क्षमता की रक्षक
भारत की जीवन धारा
गंगा निर्मल नीर दायिनी
गंगा माता पतित पावनी।

16

बहती धारा

कहती एक कहानी कल कल
बहती धारा , बहती कल -कल
पर्वत के कितने उच्च शिखर से
निकली कब से बहती आयी ,
पर्वत कैसे कैसे फैले
वृक्ष भी कैसे कैसे कितने
पर्वत पर भी हरे भरे।
धारा ने फिर गीत सुनाये
हरे भरे मैदानों के
कितने कितने गांव शहर हैं ,
स्थित उभय किनारों पर
धारा ने शिक्षा दी देखो ,
चलते रहना , बढ़ते रहना
जीवन पथ पर आगे ही
हर पल चलते बढ़ते रहना।

17
उन्नत परिपाटी

गंगा यमुना से अभिसिंचित
यह भूभाग हमारा

यहाँ असीमित ज्ञानचक्षु हैं
कितनी कितनी जीवन धारा।
कल्याण प्राणिमात्र का हो
इससे प्रेरित अपना दर्शन
विश्व शांति के लिए हमेशा
अपने राष्ट्र का चिंतन।

संतुष्टि का भाव यहाँ ले
जन मन है आह्लादित
जनकल्याण लिए कार्यों में
परमार्थ भाव से उर प्रेरित।
आध्यात्म यहाँ मन में स्थित
यही प्रेरणा बन जाती ,
जीवनशैली इतनी रोचक
कभी नहीं थकती।
विपदा में भी कहीं कोई हो ,
पर कभी हताशा न आती ,
भारत की संस्कृति अनूठी
इसकी उन्नत परिपाटी।

शांति अहिंसा से महकी है ,
चन्दन सी इस देश की माटी।

18

शक्ति आख्यान

शक्ति के आख्यान भरे हैं
भारत के ग्राम नगर में
खेतों खलिहानों में भी
उन्नत जीवन ज्ञान सुने हैं।

लोक रूप में उन्नत दर्शन
यहाँ कृषक समुदाय बताये ,
प्राणिमात्र में ईश्वर दर्शन
साधारण इंसान बताये।

इसीलिए अध्यात्म भूमि यह ,
यह देवों को प्रिय है ,
यहीं अवतरित हो ईश्वर ने
अवतारों के प्रतिमान गढ़े हैं।

दर्शन चिंतन यहाँ नित नये ,
विश्व ज्ञान फैला है ,
अपने पथ पर सदा अडिग रह
हम परोपकार करते रहते।

19

अवध

यह अवध का परिक्षेत्र
आदि इतिहासों को संजोये
यह सनातन भूमि गर्वित
यहाँ बन अवतार आये
स्वयं श्री विष्णु बन श्रीराम।
यह अवध परिक्षेत्र।
यहाँ संस्कृतियां बनीं,
और जीवन मूल्य सिरजे
रूप धर संस्कार।
यहाँ पर हर ग्राम में
भक्ति के अंत विचार।
अवध का परिक्षेत्र ,
यहाँ बन अवतार आये
स्वयं श्री विष्णु बन श्रीराम।

20

मातृभूमि

मातृभूमि शत शत प्रणाम ,
तुझसे गौरवगान हमेशा।
तुझसे प्रेरित रहे सदा ,
जीवन मार्ग हमारा।

शत्रु और डाही हैं कितने
मातृभूमि के आदर्शों के
हम पर अपने कर्तव्यों से
सत्पथ पर चल , उर्जित रह
फहराते यश गौरव कीर्ति पताका।
मातृभूमि शत शत प्रणाम ,
तुझसे गौरवगान हमेशा।

21

भारत भू गौरवशाली

आदि काल में अधिकांश जगह ,
जब संस्कृतियों का नाम नहीं था ,
यह भारत भू तबसे गौरवशाली
हमने वैश्विक ज्ञान दिये ।
वेद यहाँ पर दे प्रकाश
मूल्य अपरिमित दर्शाये
यहाँ मनुज ही नहीं , प्रेम
जड़ चेतन प्रकृति मात्र सिखलाये।
यह विराट संस्कृति अपनी
यह अपनी जीवनशैली।
परोपकार है मन्त्र जहाँ पर,
जहाँ सत्य की जय निश्चित है ,
उस महादेश की हम संसृतियाँ
आदर्शों के सम्मुख आत्मार्पित हैं।

22
जहाँ समृद्धि खन- खन बोले

जहाँ समृद्धि खन- खन बोले
पकी हुयी फसलों में
हर्ष जहाँ संतोष रूप में
नदियों में अमृत घोले
उस संस्कृति का राष्ट्र हमारा
हम इसकी संसृतियाँ हैं।

मानव जीवन को गढ़ती हैं
यहाँ महाकाव्य स्मृतियाँ।
वेदों उपनिषदों की धरती ,
ज्ञान प्रयोगों , दर्शन की।

यहाँ निराशा तिमिर नहीं है ,
सत्यमेव जयते की ध्वनि है ,
कृषकों , मजदूरों से लेकर
आचार्यों , विज्ञ जनों तक।

ज्ञान कला साहित्य क्षेत्र में
दर्शन , कौशल , चिंतन में
कहीं न कहीं मूलभाव है ,
आध्यात्मिक जीवन दर्शन का ।

यहाँ समृद्धि , यहाँ शक्ति है
धरती के कण कण में।

23

राष्ट्र शक्ति

यहाँ सूर्य का तेज़ व्याप्त है ,
सोच तीव्र , कर्मठ जीवन है ,
यहाँ तुहिन भी अमृत भरती ,
हर मन के जीवन चिंतन में।

आत्म प्रेरणा हमें सिखाती ,
सद्जीवन पर बढ़ते रहना ,
और हमारे संस्कार
देते हमको श्रेष्ठ प्रेरणा।

जीवन का है रहस्य पता ,
प्राणिमात्र को यहाँ देश में
यहाँ राष्ट्र की शक्ति निहित है ,
जड़ चेतन में , उर्जित बल में।

24

इतिहास इन्ही से बनता है

हम सानंद बैठ कर घर में
जब कार्य निरत रहते हैं
यह शांति , यह अवसर
सोचा है कैसे मिलता है ?
भारत की सीमाओं पर
सजग सैन्य बल रहता है,
है नमन सैनिकों योद्धाओं को
इतिहास इन्ही से बनता है।

25

है शांति यहाँ दर्शन चिंतन

है शांति यहाँ दर्शन चिंतन
कान्ति यहाँ है ,ओज यहाँ।
अदिकाल से सुस्थापित
यह भारत भूमि सुवासित।
सांख्य , योग , मींमांसा के स्वर
न्याय और वैशेषिक दर्शन।
कर्म यहाँ पर , धर्म यहाँ पर ,
भक्ति यहाँ , निष्कपट आचरण।
हर मन में स्थित दान यहाँ
हर प्राणी है कर्म निरत तत्पर ,
प्रेरित मन में निष्काम भाव ,
जीवंत चराचर जड़ चेतन।
कण- कण ,मन -मन ,स्वर स्पंदित
प्रकृति राग में मन स्थापित ,
करुणा और प्रेम की वाणी ,
हर श्वास यहाँ परमार्थ हेतु।
मन स्नेह भरा ,रह स्वयं प्रकाशित,
प्रेम स्नेह करुणा से पुलकित ।

हालाँकि कुटिल अरि छद्मों वश
समय समय पर सेंध लगाये ,
कुछ कितनी कपट पूर्ण युक्ति से
कुछ उसमे कुटिल नीति से
विश्वासघात करते कितने
यहाँ शांति विध्वंसक आये ,
किन्तु हमारी उन्नत क्षमता ,

यश तप से स्फूर्त आस्था
उनको भी पाठ पढ़ाती।
हमने सबको है अपनाया
और शरण देकर प्रांगण में
जय राष्ट्र विजय सन्देश सुनाया।

26
जीवन उदधि भरा मूल्यों से

जीवन उदधि भरा मूल्यों से
उन्नति के प्रतिपल विचार
प्रेरित कर्मों की लिये श्रृंखला
मन की गति में भी सद्विचार।
भारत का हर उर्जित कण
जाने कब से कर मूल्य सृजन
दिखा रहा है दृष्टि प्रबल ,
इस धरती पर जड़ भी चेतन।
हम राष्ट्र मूल्य ले कर निकलें
अपनी जीवन यात्रा क्रम में ,
हर लक्ष्य सरल , हर पथ स्थिर
और हमारी जीत प्रबल।

27
राष्ट्र तुम्हारा खड़ा वहाँ

है कहीं तिमिर जो फैल रहा
तू बन प्रकाश के पुंज प्रबल
बो यहाँ रश्मियों की फसलें
अन्धकार को दूर भगा।
जीवन में हर पल घोल स्वाद ,
जो मिले तुझे उसको महका
संस्कृति कोशों से चुन चुन कर
अपनी आभा को प्रबल बना।
है राष्ट्र तुम्हारा खड़ा वहाँ ,
बस देख हृदय से इसको तू ,
फेर देख उधर जीवन की गति ,
इसकी धारा प्रांजल निर्मल।

28

पथ पर चल स्थिर हो मन

निष्ठुर सा विपरीत बहुत
पथ है दुर्गम दुष्कर सा कुछ ,
तू काट सभी यह बाधायें
पथ पर चल स्थिर हो मन
तू चल !
नाहक इन पर हे तू रुक
लक्ष्य दिख रहा,
बस रख स्थिर।
चल मन शास्वत तू विजय खोज
तू चल स्थिर हे मन
तू चल !

है शत्रु कई विधि रूप धरे
अंदर भी सक्रिय , बाहर भी ,
तू मन कर स्थिर , विजय सोच
तू चल स्थिर हे मन ,
तू चल !

29

युद्ध

और फिर थम जायेगा अचानक युद्ध
राख बन कर उड़ चुका होगा विश्वास
हांफती महत्वाकांक्षाओं पर क्षणिक विराम
चल उठेगा फिर नया अभियान
मिलेंगे फिर कूटनीतिक हाथ
उबलता ले अंदर फौलाद।
किन्तु उसका क्या ,ह्रदय की किरणें सूखी
सूखा मानवता का स्नेहिल द्रव्य ,
सूखी जीवन नाल।
हो सकेगा कुछ कहीं करार-
नहीं हो मानवता कभी अनाथ
दिखे न कहीं करुण वैधव्य
युद्ध की बासी गन्दी फुफकार।

30

स्नेह रंग

हर तरफ रंग
हर तरफ गुलाल
जिंदगी की व्याख्या
और संस्कार।
दूर क्षितिज भी रंगा
निकट दृष्टि भी रंगी
रँगे भाव रंग विचार
चलो चलें यार।
यही स्नेह रंग
यही जीव द्रव्य।
जिंदगी की दौड़ में जादुई पहाड़
यही रहा रंगोत्सव
हर्ष का त्यौहार।

31

सदा जागृत

घुली मधुरता संस्कृति की ,
व्यापक दृष्टि फैल रही है ,
यश गाथा भारत गौरव की
विश्व पटल पर लिखी हुई है ।
मूल्य संघनित व्यापक चिंतन ,
जीवन का हर पक्ष अवस्थित ,
दर्शन का हर स्वर अच्छादित
दिव्य तेज से ऊर्जित मस्तक
भारत भू यश गान प्रसारित ।
जीवन के मानस का दर्शन
नहीं बिंदु कण कोई अछूता ,
रक्षित ,रंजीत हर कण धरती का ,
मूल्यों से जीवन मर्यादित ,
भारत संस्कृति सदा जागृत ।

32

राष्ट्र चेतना के स्वर

अप्रतिम उज्जवल भाव लिये
राष्ट्र चेतना के गुंजित स्वर
भारत के उर्जित स्वर हैं ,
भारत के समूह स्वर हैं।

जहाँ कहीं भी लेशमात्र है ,
राष्ट्र केंद्रित स्वर से विचलन ,
उन्हें मुख्य धारा में लाकर
प्रेरित सम्यक हों आयोजन।

कलुषित विचार अरि पक्ष हमेशा ,
इन उन कितने माध्यम लेकर
राष्ट्र क्षति कि सोच जागकर
करता रहता इधर उधर से।

राष्ट्र प्रेम कि सोच सर्वदा ,
जागृत हो , स्थिर हो , स्थापित हो,
अप्रतिम उज्जवल भाव लिये
राष्ट्र चेतना , गुंजित रक्षित हो।

33

संस्कृति के उन्नत महाकोश से

संस्कृति के उन्नत महाकोश से ,
प्रतिपल प्रत्यावर्तित जीवन
संस्कृत के स्वर से चर्चित हो ,
झंकृत हो हर पग पर जीवन।

ऋषियों , मुनियों की ये धरती ,
कण- कण में भगवत दर्शन ,
ऊर्जा से प्रेरित हर कण ,
सेवा भाव समर्पण दर्शन।

इस तप भूमि , इस शौर्य केंद्र से
प्रेरित है विश्व पटल।
मेरे जीवन के सम्बल,
संस्कार और सिद्धांत यहाँ के ,
हों उन्नत हर पल , ये है प्रण,
इस श्रेष्ठ भूमि को सदा नमन ।

34

फैली है हर तरफ वल्लरी

फैली है हर तरफ वल्लरी
बना सुगन्धित विश्व मलय ,
होगीं आह्लादित आकांक्षायें,
इनसे जाने कहाँ कहाँ।
कितने होंगे पोषित इनसे
संपूर्ण विश्व में क्षेत्र हर तरफ ,
हर तरफ शीर्ष पर किसी रूप में
विद्या , कौशल और कथानक।
किन्तु मूल है निहित राष्ट्र में
और राष्ट्र की संस्कृति में ,
राष्ट्र संस्कृति के स्वर की जय
राष्ट्र भावना झंकृत स्वर जय।

35

हम भरें उड़ान , प्राप्त करें ध्येय

हम भरें उड़ान , प्राप्त करें ध्येय ,
मूल में रखें भाव ,
राष्ट्र भाव , राष्ट्र भाव।
तरल भाव बह रहा संस्कृति प्रवाह
प्रफुल्लित सभी जीव , विश्व हित भाव।
तरल भाव , गीत मृदुल ,
सभी राज्यों , गुणों युक्त ,
हैं प्रणीत ग्रन्थ सभी
सम्पूर्णता भरे भाव।
हम भरें उड़ान , प्राप्त हो ध्येय ,
मूल में रखें भाव ,
राष्ट्र भाव , राष्ट्र भाव।

36

गुंजित सभी दिशायें

गुंजित सभी दिशायें
उर्जित सम्यक स्वर।
हर्षित मन से चहक रहे हैं
विहग यहाँ बेहिचक , बिना भय।

शायद उन्हें हिमालय सा
प्रहरी दिखता हो ,
घाटी में फैले फूलों की
दिखती मोहक मृदुल श्रृंखला।

यही भूमि है जहाँ मनीषी ,
ऋषियों ने है किया तपस्या ।
आदिकाल से जागृत धरती ,
संस्कृति पोषक उसकी रक्षक।

37

नदियां ममतामयी यहाँ पर

नदियां ममतामयी यहाँ पर
संस्कृति की लिये निशानी ,
तट पर कितने पुरालेख ,
कितनी जीवंत कहानी।
कितने मेले आयोजन होते हैं ,
समय समय पर यहाँ निरंतर ।
कितनी यादें और कथानक
वंशों साम्राज्यों की ,
कितने दर्शन चिंतन की
ये नदियां जीवंत निशानी।
नदियां ममतामयी यहाँ पर
संस्कृति की लिये निशानी ,
तट पर कितने पुरालेख ,
कितनी जीवंत कहानी।

38

गाथायें सब करें समन्वित

गाथायें सब करें समन्वित ,
महाकाव्य बन जाये।
इधर उधर जो स्वर बिखरे हैं
जब हों योजित एक साथ ,
महानाद बन जाये।
जाने कितने बीज पड़े हैं ,
मिटटी के बाहर।
मिले यथेष्ट उन्हें जलवायु
सुन्दर कानन बन जाये।
बस एक समन्वय की आवश्यकता ,
एक सोच बन जाये अमर
इधर इकाई , उधर इकाई
महाशक्ति बन जाये।

39

जन गण के गौरव का प्रतीक

जन गण के गौरव का प्रतीक ,
राष्ट्र संस्कृति के का मूर्त रूप ,
भारत के जन गण का प्रतीक ,
भारत माँ का ध्वजा रूप,
लहराता नीले नभ में गर्वित ,
भारत का अपना गर्व तिरंगा ,
भारत का अपना गर्व तिरंगा।
व्यवहारों में कर स्थापित
सोच इसी से हो प्रेरित ,
है धर्म हमारा , भाव हमारा
राष्ट्र भाव का रूप तिरंगा।

40

अमृत काल है आज़ादी का

अमृत काल है आज़ादी का
स्थिर चिंतन उसपर मंथन
आज़ादी के मूल्यों का
हो सार्थक सम्यक विश्लेषण।

जिन मूल्यों से दृढ थे
आज़ादी के सैन्य सिपाही ,
सोचें आगे बढ़ें -
वल्लरी उन मूल्यों की
हमने कैसे फैलाई।

संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न भारत
एक पंथ निरपेक्ष राष्ट्र
लोकतंत्र की मर्यादा में
सबको न्याय और अधिकार।

हैं स्वतंत्र हम अपनी भूमि पर

विश्वास , विचार अभिव्यक्ति स्वतंत्र
किसी धर्म विश्वासी हों
हमें उपासना की स्वतंत्रता।
सायक अवसर हमें ,
हमारा उर्जित राष्ट्र दिलाता है ,
सबकी सम्यक है प्रतिष्ठा
और हमें उसपर समानता।
आज़ादी का अमृत काल है
इस पर चिंतन आवश्यक है ,
कर्तव्यों का ,
अधिकारों का
दर्शन वर्णन आवश्यक है।

भारत चिंतन आवश्यक है
संस्कृति चिंतन आवश्यक है।

41

भाव भारत वंदना

हम ह्रदय में ले के चलें
भाव भाषा भावना
इसके लिए कुछ दिवस क्या
जीवन जियें इसके लिए
जीवन लिए इसके लिए।
भावना की स्रोत है
मातृभाषा ममतामयी
इसमें रचित जीवन लड़ी
इससे जुडी अपनी कड़ी।
है देश की आबो हवा
यह देश की पहचान है ,
हम ह्रदय में ले के चलें
भाव भाषा भावना।

संस्कार में हमको मिली,
कर्तव्य पथ पर भी मिली
जब जब कहीं थी राष्ट्र चर्चा
व्यव्हार में हिंदी मिली।
हिंदी स्वरों की साधना
हिंदी हितों की कामना
हिंदी हमारी शक्ति है ,
यह भाव भारत वंदना।

42

तुम शक्ति पिंड श्रेष्ठ

तुम शक्ति पिंड श्रेष्ठ
नवल जोश , नवल शक्ति।
भ्रांतियां मिटा बढ़ो
नव विहान , दिग दिगंत।
भ्रांतियां मिटा बढ़ो
नव विहान , दिग दिगंत।

एक विश्व , हम सभी
रचें एक अल्पना
है कुटुंब रूप विश्व
यही संकल्प लिए
यही रहे कल्पना।

सिद्ध हों मनोभाव ,
जागृत हर प्रकार
जयतु मनुज हित सदा
जयतु विश्व भ्रातृ भाव।
जयतु विश्व भ्रातृ भाव।

43

हिंदी हमारी

है विहंगम दृष्टि की
यह मानिनी हिंदी हमारी
भावनाओं को लिए
संप्रभु भासिक शक्ति वाली।
इसकी सुशीतल दृष्टि है
सन्देश की क्षमता असीमित
इसमें कला विज्ञान के
आयाम कितने हैं असीमित।
संपर्क वाले शब्द हैं ,
राजभाषा के पिरोये ,
साहित्य सागर सा संजोये।

छंद तुलसी सूर के
ललित्य छायावाद का
माधुर्य है रसखान का
जायसी की व्यंजना।
सार्थक शब्दावली
तार्किक उच्चरण है
भाषा हमारी शक्ति है ,
जागृत हिंदुस्तान है।
सभी मजहब पंथ हैं ,
सभी के उदगार हैं ,
हिंदी अमृत संचार है।
हिंदी हमारी शक्ति है

44

विपदा के क्षणों में

वैश्विक विपदा के क्षणों में
राष्ट्र के ही कार्य सब कुछ
राष्ट्र का निर्माण सबकुछ
राष्ट्र के प्रति भाव सब कुछ।
व्यक्ति से ले व्यष्टि तक
राष्ट्र चलता है निरन्तर
राष्ट्र हिट कर्तव्य सब कुछ
कर्म का योगदान सब कुछ।
लोकतान्त्रिक मूल्य के साधक हमीं ,
शक्ति हम , सत्ता हमीं।
अभियक्ति जो करना करें
पर राष्ट्र का सम्मान सब कुछ।
राष्ट्र का परिदृश्य सब कुछ।

45

लिये रश्मि जीवन प्रभात की

लिये रश्मि जीवन प्रभात की
खुशियां इनकी उनकी सबकी
बंधुत्व ,न्याय के आलम्बन पर
स्थित है यह राष्ट्र हमारा।
इसके आत्मिक मूल्य श्रेष्ठ बन
उर्जित करते रहते हर स्वर
मानवता का शिलालेख
स्थित है पथ की गति पर।
विश्व गुरु बन आदि काल से
देता दर्शन न्यारा
यह अपना जीवंत राष्ट्र है
अपना भारत प्यारा।

46

शिला लेख बन जीवन दृष्टि

शिला लेख बन जीवन दृष्टि
और हवा में भाव हमारे
आत्म दृष्टि से उर्जित हर मन
फैलते हर तरफ उजाले।
भारत की यह उन्नत संस्कृति ,
अपनी विश्व प्रेम की दृष्टि
स्थापित है स्वयं सिद्ध बन
विश्वप्रेम की प्रेरित संस्कृति।
जय जय भारत राष्ट्र हमारा ,
जय जय भारत राष्ट्र हमारा।

47

जब हर पथ पर शिलालेख बन

जब हर पथ पर शिलालेख बन
संस्कृति की लिपियाँ दिखती हैं ,
जब विहग यहाँ गुंजन करते हैं
मूल्यों की मृदु सरिता बहती है।

कण कण में जीवन बसता है
जड़ चेतन भी साम्य दिखाता,
मृदुल स्नेह का बंधन रचता
ऐसा भारत देश हमारा।
ऐसे जीवन मूल्य हमारे
कितनी व्यापक मिलती है
यहाँ मनुजता की परिभाषा।
ऐसा भारत देश हमारा
ऐसे जीवन मूल्य हमारे।

48

कितने विहग यहाँ रह जाते

कितने विहग यहाँ रह जाते
अपना छोटा नीड़ बनाते।
दुनिया के कोने कोने से
कितने आव्रजन कर आते।
स्वयं सिद्ध हैं मूल्य हमारे
जीवन के अनुकूल सहारे।
भातृ भाव ,करुणा मिलती है
संस्कृति उर्जित आकृति लेती
सहज सुदृह मिटटी भी लगती ,
जागृत जीवन मूल्य हमार।
कितने विहग यहाँ रह जाते
अपना छोटा नीड़ बनाते।
दुनिया के कोने कोने से
कितने आव्रजन कर आते।

49

विश्व सोच है , नयी दृष्टि है

एक छटा त्योहारों की
एक छटा अपनेपन की,
हर संस्कार यहाँ मिलता है
जीवंत रूप में स्थापित।

हर मन गुंजित रहता है ,
स्नेह दृष्टि से सब परिचित
हर तरफ यहाँ कोने कोने में
मानवता स्नेह स्थापित।

विश्व सोच है , नयी दृष्टि है
जन मन में स्थापित है।

50

जय जय हमारी स्वतंत्रता

ओज उर्जित , कांति प्रेरित ,
शांति नीरव कांति चमचम
जय जय हमारी स्वतंत्रता
जय जय हमारी स्वतंत्रता।

प्रेरणा आदर्श अपने
उर्जित एवं स्फूर्त हम
एक गौरव लिपि अपनी
एक अपना पाठ विस्तृत।

हम चलें बढ़ते रहें
सन्मार्ग पर भर चेतना
ओज उर्जित कांति प्रेरित ,
शांति नीरव कांति चमचम
जय जय हमारी स्वतंत्रता
जय जय हमारी स्वतंत्रता।

51

भारत का कण कण आलोकित

भारत का कण कण आलोकित
भारत का हर मन आलोकित
यहाँ प्रेम की निर्झर धरा
और शांति के कितने दर्शन।

हम प्रकाश के महापर्व पर
आओ मन के दीप जलायें ,
आओ मन के दीप जलायें।
भारत के कण कण में शक्ति
भारत के हर मन में शक्ति।
महाशक्ति के श्रोत हम सभी
हम अपनी शक्ति पहचानें।
आओ मन के दीप जलायें ,
आओ मन के दीप जलायें।

52

दीप जलायें संस्कृति के

दीप जलायें संस्कृति के
परंपरा के दीप जलायें।
जो अपने आधार तत्व हैं
भारत की शौर्य चमक हैं
उनके सम्मुख आदर के
भावों के दीप जलायें।

दीप जलायें बलिदानों की स्मृति के भावों के प्रति
और हमरी ज्ञान विधाओं के प्रति हम कुछ दीप जलायें।

दीप जलायें हर विचार , हर भाव संस्कृति के प्रति ,
और हमारे राष्ट्र प्रवर के
प्रत्येक भाव अवयव के प्रति।
दीप पर्व है , महापर्व है ,
मन से भावों के दीप जलायें।
हम अजस्र संस्कृति प्रवाह को
मन में भर इसके प्रवाह को
स्वयं दीप्त हों , औरों को भी
इस महापुंज का मर्म बतायें।
दीप जलायें , स्वयं दीप्त हो
हम समय को महकायें।

53

राष्ट्र चिंतन

हर पीढ़ी के शब्द अलग हैं ,
हर पीढ़ी की सोच अलग है
उनके अपने अपने कौशल
उनके अपने अपने बंधन।

सन्दर्भ निहित हर कर्म रहा है
सबका अपना अपना दर्शन ,
करें समन्वित राष्ट्र कर्म हित,
जब जब हम अपने दर्शन
वही रहे बन राष्ट्र प्रतिज्ञा
स्वयं सिद्ध मानवता चिंतन।
राष्ट्र रहेगा आगे सबसे
हों कैसे कैसे बंधन जकड़े ,
यही भाव भरकर हर मानव
पाठ पर अपने निकले बढ़ के ।
यह राष्ट्र हित नियत भावना
यही स्वयं से सत्य प्रतिज्ञा।

54

स्वर प्रबल एक भाव

भिन्न रूप रंग हों ,
पुष्प मगर पुष्प हैं
महक हों अलग अलग ,
किन्तु महक महक है।

भिन्न पंथ धर्म हैं ,
विविध भाव तथ्य हैं ,
भिन्न रंग ढंग हैं
विविध रूचि आदि हैं।

विविध भाव लिये राष्ट्र
स्वर प्रबल एक भाव
यही दीप्त राष्ट्र है ,
जन गण का मान है।

55

राष्ट्र का यह पर्व प्रेरित

राष्ट्र का यह पर्व प्रेरित
सत्य का यह पर्व रक्षित
सोच का यह पर्व वर्णित
पर्व यह अपना दशहरा।

हों कहीं असत्य के बादल घनेरे
कहीं भी न बच सकेंगे
क्रूर कितने भी हों चेहरे।

सत्य की ही जीत है असत्य की है पराजय
इन्ही तथ्यों को समर्पित
पर्व यह अपना दशहरा।

56

हम स्वतंत्र हैं , मन स्वतंत्र है

हम स्वतंत्र हैं मन स्वतंत्र है
परिवेशों में यह स्वर गुंजित है।
आओ इसका भान करायें ,
समझें स्वयं और समझायें।
आज़ादी का पर्व मनायें
हर घर तिरंगा लहरायें।
इसकी मर्यादा का हम
सबको ज्ञान करायें ,
हम स्वतंत्र हैं उसका रूपक
आओ सबको बतलायें।
आज़ादी का पर्व मनायें
हर घर तिरंगा लहरायें।

57

विभाजन विभीषिका

प्रो रवीन्द्र प्रताप सिंह

और उस काल
दहल गए मर्म,
बहक गए कर्म ,
मन पर हावी स्वार्थ
लाहौर की वो सर्द शाम
सुना बंटा देश
हर तरफ विध्वंस,
हर तरफ रक्तपात।
कुटिल चाल , दग्ध हृदय
बाँटा देश ,दग्ध राष्ट्र
हुआ रक्तपात।

सुनी गयी चीत्कार
मानवता कराह उठी
असंख्य क्रूर कृत्य
मानवता मरी।
लूटपाट बलात्कार
बंटा देश ,विध्वंस था ,
विभाजन विभीषिका
विभाजन विभीषिका।

58

राष्ट्र के हैं शब्द झंकृत

राष्ट्र के हैं शब्द झंकृत
ग्रीष्म वर्षा शीत में ,
हर ऋतु हर क्षेत्र में
राष्ट्रीयता के चित्र अंकित।
पर्व जितने हैं यहाँ पर
संस्कृति के कथानक कह रहे ,
दिवस जितने हैं यहाँ पर
इतिहास की बाटन लिये।
प्रेरणा दे रहा कण कण
प्रेरणा के लोक स्वर
सन्मार्ग पर प्रेरित सभी
कौशल सृजन की प्रेरणा।
राष्ट्र के हैं शब्द झंकृत
ग्रीष्म वर्षा शीत में ,
हर ऋतु हर क्षेत्र में
राष्ट्रीयता के चित्र अंकित।

59

मन कहाँ शांति पायेगा

जब तक पश्चिम से सत्यापित
सत्य यहाँ आयेगा,
मैकाले का रूप रहेगा
मन कहाँ शांति पायेगा।

अपनी उर्वर मेधा को
हम क्यों वाह्य मानकों पर परखें
हों बंधी नहीं क्षमताएं कोई
सम्यक विचार कौशल फैले।

जब तक भी किंचित भी मन में
औपनिवेशिक बू होगी
तब तक तर्क ज्ञान के सोते
यूँ ही सुप्त रहेंगे।
भारत अध्ययन भारत चिंतन ,
बने सत्य के मानक मन में
तब तक ही तो संस्कृति के स्वर
रव बने गीत फैले निकलें।
तब भारत की कीर्ति रश्मियां
सुदृह और चिरजीवी होंगी ,
जब हम अपने संसाधन
अपने मानक खुद गढ़ लेंगे।

जब तक औरों के मानक से
खुद को हम जांचे परखेंगे

तब तक अपना सत्व नहीं

हम स्वयं जान पायेंगे।

अपने संसाधन का दोहन
जब हम स्वयं करेंगे
अपनी तकनीकी से अपना
मार्ग प्रशस्त करेंगे।

क्यों अपनी संस्कृति कला को
वाह्य मानकों से हम देखें ,
क्यों अपनी तकनीकी को
उत्पादन को हम न समझें।

जब अपना हम मूल्य
स्वयं हम परखेंगे जानेंगे ,
तब भारत की कीर्ति रश्मियां
सुदृह और चिरजीवी होंगी।

60

अपनी मिटटी के रंग

ऋतुओं के हैं गीत सुहाने
अपने अपने सबके गाने
अपनी मिटटी के रंग गंध से ,
देश को हम जाने पहचानें।

ऋतुओं के हैं गीत सुहाने
वर्षा लाई हरी भरी
हरियाली की एक कहानी
और शीत आकर कहती है
कैसे मौसम ठंडा होता
बर्फीली जब चलें हवायें,
रक्षा करना अपनी जानें।

धीरे से बसंत आ जाता
कहता सीखो खुश होना ,
गीष्म पुनः चलकर आ जाती
कहती सीखो आगे बढ़ना
चलते रहना , चलते रहना।

61

यह देश

यह देश महान सपूतों का
यह देश शूरवीरों का।
हर काल पक्ष में गाथायें
हर ग्राम नगर की शौर्य कथायें।

यह देश महान सपूतों का
इसके कण कण में है ओज भरा।
इसका चिंतन- जीवन केंद्रित
मानवता का यह रखवाला
शांतिप्रिय यह देश हमारा।
यह देश महान सपूतों का
यह देश शूरवीरों का।

हर वर्ग यहाँ प्रेरित प्रकाश से
जो आता स्वयं सिद्ध चिंतन से
हर नागरिक यहाँ का उर्जित
जन गण के उद्दात्त भाव से।

यह देश महान सपूतों का
यह देश शूरवीरों का।

62

उठ- उठ पवन महासागर से

उठ उठ पवन महासागर से
उद्‌बोधन देता है-
कहता सरल सजल बन चलना ,
जीवन को खुश रखता है।

पक्षी नीले आसमान में
विस्तृत गगन पटल में
उड़ते रहते उड़ते रहते ,
कहते यदि लक्ष्य रखें स्थिर
यह क्षेत्र देख लें विस्तृत ।

दाना लेकर चढ़ आती है
चींटी कितनी लम्बी दूरी ,
चलते चलते समझाती है ,
भार नहीं कोई मजबूरी।

हरी घाटियां ,वन -उपवन ,
फूल -पत्तियां मिलकर कहते
कैसा भी हो मौसम देखो
हम खुश रहते , हम खुश रहते।

63

उस ओर पर्वत श्रंखला

चलो थोड़ा सा चलें
उस ओर पर्वत श्रंखला ,
खड़ी सज धज के सभी
विस्तार में उत्पत्यका।
देश का वैभव लिये ,
मस्तक मुकुट सा है खड़ा
गिरिवर हिमालय, श्रंखला।
विस्तार में हैं रहस्य कितने ,
उत्कृष्ट तरुवर श्रृंखला।
क्षेत्र दुर्लभ वनस्पति का
मूल्य हर तरु वनस्पति का
ज्ञान पूंजी की मेखला।

64

गंगा

उद्गम से विस्तार पटल पर
जग शीतल गंगा भागीरथी।
कितनी संस्कृतियों को सींच सींच
चलती विराट यशस्विनी।
ऋषियों ,मुनियों जन जन की
कृषकों की , भारत जीवन की
यह जीवन अमृत प्रवाहिनी।
गंगा भागीरथी सुरसरि ,
यह जीवनदात्री मोक्षदायिनी।

65

मोड़ कितने , वलय कितने

पर्वतों की श्रंखला हो सामने
कर पार मैदानी इलाके,
हम पहुंच आये यहाँ पर।
मोड़ कितने , वलय कितने
खुशबुओं से महकती
भूमि पथ ले हरी आभा ,
पर्वतों की श्रृंखला
हर तरफ वैभव बिखेरे
श्रेष्ठ भारत की छटा।
फलों से भी लड़ी डाली
सेब के तरु खड़े कितने
लग रहा है श्रेष्ठ पथ यह
देवभूमि का बिछा।
यह हमारी है विरासत
प्रकृति का अद्भुत नमूना
राष्ट्र का प्रतिमान ,
है अडिग , यह
सुदृह अपना मान।

66

दर्शन चिंतन हर कोने

सभी भाव अपनाकर हमने सतरंगी संसार रचा
दर्शन चिंतन हर कोने का हमने है स्वीकार किया।
अपनी तो उर्वर है धरा ,पर नहीं विभेद किसी से
कोई कैसा ही चिंतन ले जब आया, हमने उसे सुना।

भारत की जन जलवायु में हर विचार प्रश्रय पाते
अपनी विकास वल्लरी को जैसा चाहें फैलाते।
हमने अपने कई प्रणेता सम्पूर्ण विश्व में फैलाये
हमने अपने ज्ञान कोष मानवता हित हैं खोले।
भारत का आयुष , तकनीकी ,भारत की ललित कलायें,
भारत का अभियंत्रण कौशल ,भारत की सभी विधायें
विश्व पटल पर छायी हैं श्रेष्ठ रश्मियां बनकर ,
भारत की ज्ञान परम्परायें बढ़ती केंद्र में मानव को रखकर।

67

अपनी संस्कृति के कोई स्वर

यदि देखें हम कहीं क्षीण हैं
अपनी संस्कृति के कोई स्वर
हम बनें सतर्क तुरंत
करें चिंतन इसपर।
संस्कृति अपनी श्रेष्ठ मूल है
इससे पोषित होकर ही
फैलेगा व्यक्तित्व हमारा
इससे ही प्रेरित रहता है
व्यक्तित्व हमारा हरा भरा।

68

भावों को लेकर हम विश्व पटल पर छाये

कोमल भावों को लेकर
हम विश्व पटल पर छाये।
यदि कहीं अहिंसा भाव दिखे
हमने मिल बैठ उन्हें सुलझाये।

वैसे तो शूर वीर धरती
लेकिन हम शांतिप्रिय हैं ,
वैरी के प्रति भी प्रेमभाव
भारत का दर्शन है।
यह राम कृष्ण की धरती ,
यह बुद्ध ,महावीर की धरती ,
हमने मानवहित ही सारे
अपने जीवन सिद्धांत बनाये।

69

धरा बने ग्रह सुखद

धर्म ने कभी नहीं कहा कि तुम घृणा करो
खांचों में बाँट कर, कर इन्हे अलग उन्हें अलग।
धर्म सभी विश्व के कह रहे प्रेम हो ,
सिर्फ मानव जाति हो ,मानवता के रंग हों।
सही मार्ग पर चलें , भ्रातृ भाव को लिये ,
दया ,करुण ,स्नेह भाव मन भरें चलें चलें।
धर्म के महँ शब्द ,काल के प्रवाह में
कुछेक कुटिल सोच ने स्वार्थवश पुनः गढ़े।
हो धर्म कोई विश्व का ,है विचार किसी श्रेष्ठ का
हम स्वयं के विवेक से ,प्रगति मार्ग देखते लें उसे।
कल्याण मात्र मर्म है , प्राणी मात्र बिंदु है ,
धरा बने ग्रह सुखद वही मर्म धर्म है।
राष्ट्र हमारा सब धर्मों को सम्यक महत्व देता है ,
अपना भारत सब धर्मों का महत्व सामान समझता है।

70

भारत का हर दिवस पर्व है

हर त्योहार हमारे उर में नया जोश ला भर देते हैं
हम में नूतन ऊर्जा का संचार करा देते हैं।
वैसे तो जीवन क्रम में हर क्षण निर्धारित कार्य हेतु
हम सूर्योदय से सूर्योदय तक कर्म निरत रहते हैं।
त्योहारों के मर्म भी हमें कितनी शिक्षा देते हैं ,
हम अपने जीवन में स्नेह पाठ ला देते हैं।
त्यौहार समाज कुटुंब का है , त्यौहार प्रेम व्यव्हार का है ,
त्यौहार राष्ट्र की , विश्व सोच कि महिमा का है।
त्यौहार हमें सत्कर्म हेतु प्रेरित भी करते हैं ,
त्यौहार हमारे जीवन में कुछ रंग नए भर देते हैं।
भारत त्योहारों की धरती , भारत पर्वों की धरती ,
भारत में हर दिवस पर्व है , भारत भूमि ही उत्सव है।

71

सम्यक हो रहे संकेत

संगठन मजबूत है चिंतन कर्म का
और सम्यक हो रहे संकेत मन से
इसी का परिणाम है यश कीर्ति अपनी
इसी का तो ध्वनि है अपनी महागाथा।
बस शब्द के हर पक्ष पर चिंतन करें
मंतव्य पर चिंतन करें , अभिप्राय पर चिंतन करें।
राष्ट्र क्या है ,मूल्य क्या है और हम क्या
इन सभी मंतव्य पर चिंतन करें।
भाव उर्जित हो सकेंगे ,हम प्रगति पथ पर चलेंगे ,
राष्ट्र के सन्देश को पढ़ते रहें ,
स्वयं को राष्ट्र हित , सिद्ध हम करते रहें।

72
राष्ट्र के हैं स्वर प्रफुल्लित

राष्ट्र के हैं स्वर प्रफुल्लित
जो खुशबुओं में फैलते हैं
राष्ट्र की है दीप्त ऊर्जा
पवन में जो बाह रही है।
राष्ट्र का यश ले ऊगा है
आज अपना तीव्र सूरज
राष्ट्र के सम्मान में
है चतुर्दिक यस्द ध्वनि गर्जन।
विहग का जीवंत कलरव
राष्ट्र गरिमा गा रहा ,
उदधि का फैलाव भी
अपनी विरासत कह रहा।
है हिमालय सा उठा शीश अपना
चतुर्दिक फैला सुवासित
श्रेष्ठ यश अपना।

73

हों कृत्य सभी प्रेरित

हमने रख कर राष्ट्र धर्म अपने
अपने लक्ष्य किये निर्धारित
राष्ट्र धर्म के भावों से
हों कृत्य सभी प्रेरित।
किसी धर्म में रहे आस्था
कोई हमारे संप्रदाय विचार
राष्ट्र प्रथम है इस चिंतन से
जागृत हों अपने विचार।
हमने रख कर राष्ट्र धर्म अपने
अपने लक्ष्य किये निर्धारित
राष्ट्र धर्म के भावों से
हों कृत्य सभी प्रेरित।

74

यह राष्ट्र ऊर्जा शक्ति ही है

यह राष्ट्र ऊर्जा शक्ति ही है
जो हमारा यश चतुर्दिक
देखा नहीं कितने मिटे
राष्ट्र जग में यूँ अस्थिर।

शक्ति का सम्मान है ,
यह वही ही काल है ,
हाँ शक्ति विद्या ज्ञान की हो,
हो शक्ति अविष्कार की।

संपूर्ण अवनि ताल पर सुहृदय
ज्ञान अपना फैलता
यही ऊर्जा भाव अपना
यही है यशगान अपना।

75

स्वतंत्र रहे चिंतन अपना

स्वतंत्र रहे चिंतन अपना
जन कल्याण हेतु चिंतन अपना।
वैसे तो किनते धरती पर
समर्थ हो बनते आततायी ,
भारत मूल्यों से प्रेरित हों
हमने कल्याण दृष्टि अपनायी।
विश्वशांति प्रेरित विद्या
विश्व शांति हित अपना कौशल।
यह ही भारत का दर्शन ,
ऐसा ही भारत का चिंतन।

प्रो रवीन्द्र प्रताप सिंह

डॉ रवीन्द्र प्रताप सिंह लखनऊ विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्रोफेसर हैं। वे अंग्रेजी और हिंदी लेखन में समान रूप से सक्रिय हैं । फ़्ली मार्केट एंड अदर प्लेज़ (2014), इकोलॉग(2014) , व्हेन ब्रांचो फ्लाईज़ (2014), शेक्सपियर की सात रातें (2015) , अंतर्द्वंद (2016), तीन पहर (2018)चौदह फरवरी (2019),चैन कहाँ अब नैन हमारे (2018) उनके प्रसिद्ध नाटक हैं। बंजारन द म्यूज(2008) , क्लाउड मून एंड अ लिटल गर्ल (2017),पथिक और प्रवाह (2016) , नीली आँखों वाली लड़की (2017), एडवेंचर्स ऑव फनी एंड बना (2018),माटी (2018)द वर्ल्ड ऑव मावी(2020), टू वायलेट फ्लावर्स(2020) प्रोजेक्ट पेनल्टीमेट (2021),कोरोना और आम आदमी की कविता (2021), एक अनंत फैला आकाश (2022) उनके काव्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने विभिन्न मीडिया माध्यमों के लिये सैकड़ों नाटक , कवितायें , समीक्षा एवं लेख लिखे हैं। लगभग दो दर्जन संकलनों में भी उनकी कवितायें प्रकाशित हुयी हैं। उनके लेखन एवं शिक्षण हेतु उन्हें स्वामी विवेकानंद यूथ अवार्ड लाइफ टाइम अचीवमेंट , शिक्षक श्री सम्मान ,मोहन राकेश पुरस्कार, भारतेन्दु हरिश्चंद्र पुरस्कार, डॉ राम कुमार वर्मा बाल नाटक सम्मान 2020 ,एस एम सिन्हा स्मृति अवार्ड जैसे सत्रह पुरस्कार प्राप्त हैं ।

संपर्क : अंग्रेजी एवं आधुनिक यूरोपीय भाषा विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ 226007
ईमेल : rpsingh.lu@gmail.com
फ़ोन : 9415159137

UNDERTAKING

This is to certify that the undersigned hereby gives permission to UGC to publish **गंगा की अविरल धारा (आज़ादी के अमृतकाल में कवितायें)** a book in Hindi Language for UG /PG students.

The author has conducted all the necessary research and holds full ownership of the written book / text and gives permission to the publisher to publish it on print or digital format

The publisher will have full right to the published book/text and are authorized to do any modifications, republication, or any other assistance related to the text, if highly required.

No legal action will be taken by the author besides the terms and conditions of this Contract.

Sincerely,

Prof .Ravindra Pratap Singh ,

Department of English and MEL

University of Lucknow , Lucknow

Uttar Pradesh